02/2018

JANUARY' 18

Wk-03 Day 015-350

MONDAY 15

बी०ए० पार्ट II हिन्दी प्रतिष्ठा

हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक,
हिन्दी विभाग
एस० एस० कॉलेज, जहानाबाद

हिन्दी भाषा संस्कृत भाषा के क्रमिक विकास ~~का~~ यथा पालि > प्राकृत > अपभ्रंश > हिन्दी [illegible] है। यह भाषा भारत की सांस्कृतिक वाहिका भी है और उसकी आत्मा की वाणी भी। इसीलिए हिन्दी अपने क्रमिक विकास में ~~इतनी~~ आज इतना विस्तार पा सकी है। यही कारण है कि हिन्दी ~~क~~ भाषा में लिखे साहित्य को इसके परवर्ती साहित्य से अलग करके नहीं देख सकते। यह एक प्रकार से भारतीय जातियों की वाहिका है।

पिछले लगभग एक हजार वर्षों से हिन्दी में लेखन का कार्य अबाध गति से चल रहा है। काल की गति के साथ हिन्दी साहित्य भी ~~क्रम~~ क्रमशः समृद्ध होता चल रहा है। एक बात ध्यान देने की है कि लिखे जा रहे साहित्य की दिशा एक जैसी नहीं है। उसमें हर पल नवीनता आ रही है और साहित्य में विविधता का अस्तित्व बना हुआ। इतिहास लेखन की यह एक महत्वपूर्ण कसौटी है कि वह साहित्य में उपलब्ध विविधता का सम्यक विवेचन-विश्लेषण ~~कर~~ कालक्रमानुसार करे। साहित्य में कालचिंतन की यह स्थिति प्रवृत्ति कहलाती है। यह प्रवृत्ति वस्तुतः समाज, विशेषतः उस ~~भाषा~~ भाषा के बोलने वाले समाज की प्रवृत्ति होती है ~~जो~~ जिसका प्रतिनिधित्व वह भाषा करती है।

हिन्दी भाषा संवत 1050 तक आते-आते अपने अस्तित्व की स्वतंत्रता पा लेती है। वैसे तो आगामी अनेक वर्षों तक अपभ्रंश में रचना होती रही था किन्तु हिन्दी का अस्तित्व अपनी पूर्ववर्ती भाषा से अलग हो गया था।

यद्यपि उस समय लेखन सामग्री की प्रचुरता नहीं था तथा छापाखाना इत्यादि के न होने से साहित्य ग्रंथों के प्रचार एवं संरक्षण में काफी कठिनाई आती थी। यही कारण है कि तत्कालीन साहित्यिक ~~ग्रंथ~~ ग्रंथों की प्रतियां आज अप्राप्य हैं। कुछ पाण्डुलिपियां मिली हैं जिनके आधार पर शोध के क्रम में विद्वानों ने हिंदी साहित्य के ~~का~~ इतिहास का विवेचन-विश्लेषण किया है। कुछ विद्वानों का मत है कि हिंदी साहित्य का वास्तविक एवं स्वतंत्र अस्तित्व संवत 1050 से स्पष्टत: दिखलाई पड़ने लगता है जबकि कुछ विद्वान जिनमें डॉ० रामकुमार वर्मा प्रधान हैं; हिंदी के अस्तित्व को संवत 750 में ही अपनी पूर्ववर्ती भाषा से अलग होता हुआ देखते हैं। किंतु अधिसंख्य विद्वानों और आचार्यों का मत है कि हिंदी साहित्य का समारंभ संवत 1000 से 1050 के बीच ही माना जाना चाहिए। इस वर्ग का प्रतिनिधित्व आचार्य रामचंद्र शुक्ल करते हैं। इस काल में जो थोड़े से ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं वे हैं -

(I) पृथ्वीराज रासो
(II) खुमाण रासो
(III) बीसलदेव रासो
(IV) परमाल रासो
(V) जय मयंक जस चन्द्रिका
(VI) हम्मीर रासो
(VII) ढोला मारू रा दूहा
(VIII) विद्यापति की पदावली
(IX) कीर्तिलता
(X) कीर्तिपताका
(XI) वीरदेवसिंह चरित
(XII) अमीर खुसरो की मुकरियां और पहेलियां